



शब्द शब्द संघर्ष

DNA

डेली न्यूज ऐक्टिविस्ट



राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

website : www.dnahindi.com

डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्ल्यू./एन.पी.-358/2016-18

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 संस्करण : लखनऊ

डेली न्यूज ऐक्टिविस्ट

लखनऊ, सोमवार, 7 अक्टूबर 2019

दृष्टिकोण

www.dailynewsactivist.com

चक्रवाती वर्षा और बाढ़ का प्रकोप

पहाड़ी क्षेत्र में अत्यधिक तबाही, धूलभरी आंधी, चक्रवाती तूफान और भूस्खलन आदि का दौर वर्ष 2014 के बाद से संयुक्त राज्य अमेरिका से शुरू हुआ और अब दुनिया भर में इसकी आवृत्ति कई गुना बढ़ गई है। सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, भारत, चीन, जापान, थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि हैं जहां लोगों के हताहत होने का खतरा, बुनियादी ढांचे को नुकसान और घरों, पुलों व पावर स्टेशन को बहा ले जाने की नौबत हर साल अधिकाधिक हो रही है...



● प्रो. भरत राज सिंह

brsingh1ko@gmail.com

अपना देश भारत तीन तरफ से तटीय और चौथी तरफ हिमालय की पहाड़ियों से घिरा है। कुल आबादी का 43.7 प्रतिशत तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में और 14.2 प्रतिशत आबादी तटीय क्षेत्र और तटीय जिलों में रहती है। ये निचली सतह और घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं, जिनपर बाढ़ का विनाशकारी प्रभाव पड़ सकता है। इस वर्ष देश के तटीय क्षेत्र में बाढ़ और हिमालयी क्षेत्र भूस्खलन के कई गुना प्रभाव का सामना करते दिखे हैं। पिछले पांच वर्षों में पठारी क्षेत्रों में तूफान व हिमालयी क्षेत्र में भूस्खलन का विनाशकारी सामना किया है। बड़े चक्रवाती तूफानों और तेज हवाओं से तटीय क्षेत्रों में भारी बारिश हो रही है और उसका दबाव पठारी क्षेत्रों में होने से मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश व बिहार आदि तक जल प्रलय में बदल गया है। हर साल इसकी आवृत्ति व विनाशकारी प्रभाव बढ़ ही रहा है। साल 2013 में 16-17 जून के बीच केदारनाथ घाटी में आई आपदा ने उत्तराखंड राज्य में विनाशकारी भूस्खलन व भीषण बाढ़ का प्रकोप लाया, जिससे मंदिर के पास 16 जून को तबाही का मंजर देखा पड़ा था। यह घटना बादल फटने से नहीं बल्कि हिमालय की ऊंचाई पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण घने ग्लेशियर की चादरों में दार आने से हुई थी। भारी ग्लेशियर की चादरें पहली बारिश के दौरान टूटकर नीचे चली गईं और विनाशकारी भूस्खलन व बाढ़ का कहर बरपा गई। असल में इस तरह के भूस्खलन और मिट्टी के खिसकने की आवृत्ति हिमालय क्षेत्र में अधिक तीव्रता के साथ भविष्य में बढ़ती रहेगी। दूसरी ओर, साल 2013 में ही 12 अक्टूबर को ओडिशा में चक्रवाती फेलिन तूफान के कारण बहुत तेज गति की हवाओं और भारी वर्षा ने राज्य के तटीय जिलों में विशेष रूप से घरों, खड़ी फसलों, बिजली और संचार व्यवस्था को व्यापक क्षति पहुंचाई। फिर साल 2014 में 11 अक्टूबर को आंध्र प्रदेश में चक्रवाती तूफान हुदहुद ने हवा की तीव्र गति से दस्तक देकर 66 किमी व्यास का केंद्रबिंदु बनाया, जिसकी न्यूनतम तीव्रता 185 किमी और 12 अक्टूबर को दोपहर के समय अधिकतम 260 किमी प्रति घंटा की रफ्तार वाली ताकतवर हवाओं ने आंध्र प्रदेश के तटीय जिलों में व्यापक क्षति पहुंचाकर 14 अक्टूबर को पूर्वी उत्तर प्रदेश में कम दबाव कारण हिमालय तक पहुंचकर समाप्त हुई। फिर 2014 में ही 31 अक्टूबर को गुजरात में चक्रवाती तूफान नीलोफर अरब सागर से उठा और अंत में 215 किमी प्रति घंटा तक की रफ्तार के साथ तीसरा सबसे

शक्तिशाली चक्रवात बन गया। इसके बाद साल 2018 में 11 अक्टूबर को ओडिशा में उठे चक्रवात तितली ने आंध्र प्रदेश में कम से कम आठ लोगों को मार डाला और तटीय क्षेत्रों पर 130-140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से टकराने के बाद ओडिशा में तबाही का निशान छोड़ गया। इसी तरह साल 2015 में 28 अक्टूबर को गंभीर चक्रवाती

700 आश्रय घरों में पहुंचाने और क्षेत्र के सभी स्कूल-कॉलेज बंद करने की घोषणा की गई। पूर्वानुमान में तूफान के पश्चिम की ओर मुड़ने की संभावना थी। यह तूफान अपतटीय क्षेत्रों में गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ जिले के समानांतर चला था। अंत में यह तूफान अरब सागर की तरफ मुड़ गया। इसी साल जब लोग मानसून

जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा। बंगाल की खाड़ी के दक्षिणी क्षेत्र से आनेवाली तेज हवाओं ने पूर्वोत्तर भारत को तितर-बितर किया। 6 अगस्त और इससे आगे की आपदा मुख्यतः गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के एक हिस्से में आई और अगली सुबह तक 50 मिलीमीटर बारिश हो गई। तेज और लंबे समय तक बारिश अचानक बाढ़ का कारण बन गई। 8 अगस्त को पूर्वी भारत, मध्य भारत और उत्तरी मैदान पर सर्कुलेशन बना रहा और उत्तरी मैदान के ऊपरी स्तर पर पश्चिमी विक्षोभ से एक सर्ज और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपर एक चक्रवाती परिचलन के कारण मुख्य रूप से उत्तरी मैदानी क्षेत्र में गरज के साथ बारिश हुई। मध्य अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में किसी न किसी तरह के समुद्री तूफान का प्रभाव बना रहा। 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली तेज हवाओं से कोंकण क्षेत्र, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटीय स्थानों और बाद में अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में भी वर्षा होती रही। इस सबसे हमने पाया कि पहाड़ी क्षेत्र में अत्यधिक तबाही, धूलभरी आंधी, चक्रवाती तूफान और भूस्खलन आदि का दौर वर्ष 2014 के बाद से संयुक्त राज्य अमेरिका से शुरू हुआ और अब दुनिया भर में इसकी आवृत्ति कई गुना बढ़ गई है। सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, भारत, चीन, जापान, थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि हैं जहां लोगों के हताहत होने का खतरा, बुनियादी ढांचे को नुकसान और घरों, पुलों व पावर स्टेशन को बहा ले जाने की नौबत हर साल अधिकाधिक हो रही है। दरअसल, यह केवल मानव निर्मित ग्लोबल वार्मिंग की समस्या के कारण है जिससे विकसित और विकासशील देशों को जोडीपी आपदा प्रबंधन नियंत्रण के भारी खर्च के कारण कम हो रही है। हमें पर्यावरणीय क्षति को नियंत्रित करने के लिए अधिकाधिक पेड़ लगाकर हरियाली के क्षेत्रफल को 60 फीसदी पर लाना होगा, ताकि प्रकृति में हुए भारी विघटन की क्षतिपूर्ति की जा सके। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जल संचयन हेतु जलाशयों को पुनर्स्थापित कर धरती को रिचार्ज करना होगा और अक्षय ऊर्जा का भी यथासंभव अधिकाधिक उपयोग करना होगा। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवीय तट से बर्फ पिघलने के कारण समुद्री सतह में बढ़ती रहने से पृथ्वी के घूमने की गति और कोण तक में परिवर्तन होना संभव है। ऐसा हुआ तो वह एक काला अध्याय होगा, जब इस खूबसूरत पृथ्वी ग्रह पर संपूर्ण जीव-जंतु और प्राणी अपने अंत के भयानक परिणामों का सामना करने हेतु बाध्य होंगे। इसलिए हमें अभी से सचेत हो जाना चाहिए, ताकि स्थिति नियंत्रण से बाहर न हो जाए।

(लेखक लखनऊ में वैदिक विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष और स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक हैं)

क्षमय चक्र



तूफान चपला उत्तर हिंद महासागर के पश्चिमी भारतीय क्षेत्र के दूर-दराज से तीसरा नामित तूफान विकसित हुआ था। साल 2018 में 19 दिसंबर को भी धूल भरे फेथाई चक्रवात ने आंध्र प्रदेश में हजारों लोगों को सुरक्षित स्थान के लिए बाध्य किया। फेथाई चक्रवात पड़ोसी तमिलनाडु, केरल और पांडुचेरी में भी तबाही मचा गया। इस साल 2019 में 3 मई को ओडिशा में चक्रवाती तूफान फोनी पूर्वी भारत के तटीय शहर जगन्नाथ पुरी के पास एक विशाल उष्णकटिबंधीय चक्रवात के रूप में भीषण तबाही मचा गया, जिससे 2.1 मिलियन लोगों के घरों को नुकसान पहुंचा। इसी साल 12 जून को गुजरात में उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्तर-पश्चिम भारत की ओर बढ़ रहा था जिससे छह मिलियन लोगों के प्रभावित होने और 13 जून को गुजरात के समुद्र तट से टकराने की आशंका थी। 12 जून को लगभग तीन लाख लोगों को

का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, चक्रवाती बारिश ने जगह-जगह कहर बरपाया। जुलाई-अगस्त में भारी बारिश के कारण उत्तरी राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर व हरियाणा में भूस्खलन से मुसीबत आ गई तो तटीय कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र में पुणे और मुंबई, गुजरात में बड़ौदा व अहमदाबाद, राजस्थान, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के उत्तर पूर्व और पश्चिमी भाग में तूफानी बाढ़ आ गई। हम जानते हैं कि देश का कृषि रोजगार बारिश पर निर्भर है और जोडीपी में भी इसका महत्वपूर्ण अनुपात है। ऐसे में चक्रवाती बारिश की विभीषिका से कई राज्यों में बड़ा दुःखभाव रहा। 5 अगस्त को आई आपदा के कारण अरब सागर से तेज हवाओं का प्रवाह कोंकण क्षेत्र में प्रभावी रहा। तटीय महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल में 100 मिमी की कुल वर्षा सामान्य रूप में हुई, जबकि 150 मिमी तक भारी वर्षा हुई जिससे